हिन्दुस्तान बुधवार, 11 जून, 2008, पटना

इंजीनियरिंग पास कर रहे खेती

पटना (हि. ब्यू.)। नालंदा के उस अभियंता ने मशरूम उत्पादन में ऐसी धूम मचाई कि अपने उत्पाद को पटना में खपाने वाले दिल्ली के मशरूम व्यापारियों के दांत खट्टे होने लगे। गांव वालों के मुंह से निकलने वाले 'पढ़े फरसी बेचे तेल' जैसे जुमले भी बीआईटी सिंदरी से इंजीनियरिंग पास कर कृषि कार्य में जुटे बिंद के संजीव कुमार को विचलित नहीं कर सके। इंजीनियरिंग पास करने के बाद नौकरी तो दिल्ली में लग गई लेकिन उसका दिल वहां नहीं लगा। गांव की मिट्टी उसे खींच लाई और नौकरी छोड़ वह जुट गया मशरूम उत्पादन में। घरवालों के ताने भी उसने खूब सहे। डाक्टरी और इंजीनियरिंग के पेशे से जुड़े दो अन्य भाइयों के उदाहरण भी पेश किये गये। लेकिन उसपर तो मानो सनक सवार थी। आसपास के गांवों के कई लोगों को जोड़कर उसने मशरूम उत्पादकों का एक समूह तैयार कर लिया। फिर क्या था, चल पड़ा मशरूम का व्यवसाय और नालंदा जिले के बिंद, जहाना, रसलपुर और ननौर आदि गांवों के किसानों द्वारा उत्पादित मशरूम 'बिंद का मशहूर मशरूम' ब्रांड के नाम से विख्यात हो गया। अब रोज दस क्विंटल मशरूम पटना में खपाने वाले दिल्ली के व्यापारियों की परेशानी बढ़ने लगी।

- मशरूम उत्पादन में ऐसी धूम मचाई बिंद के संजीव ने
- नालंदा के अभियंता ने दिल्ली के व्यापारियों के दांत खट्टे किए
- बीआईटी सिंदरी से इंजीनियरिंग पास संजीव कुमार नौकरी छोड़ लग गए खेती में

हालांकि मांग अधिक होने के बावजूद अभी एक क्विंटल ही रोज वह पटना भेज पाता था। अचानक पटना में लगे मशरूम बीज का लैब बंद हो गया और बीज के संकट के कारण उत्पादन बंद हो गया। एक बार रांची से बीज लेकर उसने काम तो शुरू किया लेकिन बीज खराब निकलने के कारण सौदा घाटे का हो गया। अब संजीव बिंद में ही अपना लैब बैठा रहा है। अगस्त माह से इसमें काम शुरू हो जायेगा। इसके पूर्व उसने कई बार सरकारी सहायता की भी गुहार लगाई लेकिन कोई लाभ न मिला। अंततः उसने अपने बूते लैब लगाने की बात ठान ली और पहुंच गया मुकाम पर।